ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 107-111
www.allresearchjournal.com
Received: 05-02-2024
Accepted: 07-03-2024

अमृता राव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
अमृता राव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश भारत

भूदान आन्दोलन की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति (आन्दोलन, कल्पना और साहित्य)

अमृता राव

सारांश
भूदान आंदोलन इतिहास में घटित एक बड़ी सामाजिक-राजनीतिक परिघटना है। हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में बड़े-बड़े साहित्यकारों ने इस आन्दोलन पर रचनाएं लिखी है । इस आंदोलन को एक और हिंसा और लोभ के ऊपर सौहार्द और सहज मानवीय उदारता के विजय के रूप में देखा गया है दूसरी ओर इसे प्रगति विरोधी, क्रांतिविरोधी, और बड़े भूस्वामियों का पोषक मानकर इसकी उपेक्षा की गई है।इन्हीं विचारों, घटनाओं का उल्लेख हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य में किया है। उन्हीं रचनाओं का विवेचन और विश्लेषण किया गया है।

कूटशब्द: विनोबा भावे, अहिंसा, भूदान, साहित्य, आन्दोलन, पदयात्रा, सामाजिक, आर्थिक, विधा।

प्रस्तावना
विनोबा भावे के भूदान आंदोलन को देश-दुनिया ने देखा परखा था ।राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना भी हुई। 'हालय टेनिसन' ने कुछ दिनों विनोबा के पदयात्रा में रहकर उन पर 'सेंट ऑन द मार्च' किताब लिखा। फ्रांस के लम्फदेल्वास्ता ने लिखा था- "भारत के सामाजिक तथा आर्थिक क्रांति में विनोवा का योगदान एक नाट्यपूर्ण चमत्कार है।" इस आंदोलन से हिंदी साहित्य भी अछूता ना रहा।हिंदी साहित्य बड़े-बड़े रचनाकारों ने इस आंदोलन में भाग लिया और साहित्य की विभिन्न विधाओं में इस पर लेखनी चलाई।

शोधप्रविधि
इस शोध पत्र की विषयवस्तु इतिहास और साहित्य से सम्बंधित है।

शोध प्रविधि के रूप में विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, एतिहासिक और विश्लेषणात्मक प्रविधि का सहारा लिया गया है।

भूदान अन्दोलन और हिन्दी साहित्य(मूल आलेख)

18 अप्रैल 1951 को आन्ध्र प्रदेश की एक घटना ने देखते-देखते एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया।अप्रैल 1951 में साम्यवादी आतंक से ग्रस्त तेलंगाना के शिवरामपल्ली में सर्वोदय समाज का सम्मेलन तय हुआ।अनेक लोगों के आग्रह पर विनोबा भावे शिवरामपल्ली पहुचे।वापस लौटते वक़्त

तेलंगाना के पोचमपल्ली (Pochampally) गाँव के दलितों ने उनसे जीविकोपार्जन के लिये लगभग 80 एकड़ भूमि प्रदान कराने का अनुरोध किया।विनोबा ने गाँव के ज़मींदारों को इस आंदोलन में आगे आने और दलितों की सहायता करने के लिये कहा। उसके बाद एक ज़मींदार (रामचंद्र रेड्डी)ने आगे बढ़कर आवश्यक भूमि प्रदान करने की पेशकश की। इस घटना ने बलिदान और अहिंसा के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

यह भूदान (भूमि का उपहार) आंदोलन की शुरुआत थी।यह आंदोलन 13 वर्षों तक जारी रहा और इस दौरान विनोबा भावे ने देश के विभिन्न हिस्सों (कुल 58,741 किलोमीटर की दूरी) का भ्रमण किया।

वह लगभग 4.4 मिलियन एकड़ भूमि एकत्र करने में सफल रहे, जिसमें से लगभग 1.3 मिलियन को गरीब भूमिहीन किसानों के बीच वितरित किया गया।स्वतंत्रता के बाद लगभग 57 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि कुछ ज़मींदारों के पास थी। विनोबा भावे का मानना था कि भूमि का वितरण सरकार कानून बनाकर न करे अपितु देश भर में एक ऐसा आंदोलन चलाया जाए जिससे ऐसे ज़मींदार जिनके पास आवश्यकता से अधिक भूमि है, स्वेच्छा से ज़रूरतमंद किसानों को दे दें।

विनोबा भावे गांधीवादी थे, अत: उन्होंने विभिन्न राज्यों में पदयात्राएँ कीं तथा ज़मींदार एवं भू-स्वामियों से मिलकर आवश्यकता से अधिक भूमि को गरीब किसानों में बाँटने हेतु आग्रह किया। भूदान आंदोलन में पाँच करोड़ एकड़ ज़मीन दान में हासिल करने का लक्ष्य रखा गया।

कुछ ज़मींदार जो कई गाँवों के मालिक थे, उन्होंने पूरा-का-पूरा गाँव भूमिहीनों को देने की पेशकश की जिसे ग्रामदान कहा गया। इन गाँवों की भूमि पर लोगों का सामूहिक स्वामित्व स्वीकार किया गया। इसकी शुरुआत ओडिशा से हुई। जहाँ एक तरफ यह आंदोलन काफी हद तक सफल रहा वहीं दूसरी ओर, कुछ ज़मींदारों ने भूमि सीमांकन से बचने के लिये इसका गलत लाभ उठाया।

इस आंदोलन ने दुनिया भर से प्रशंसको को आकर्षित किया तथा स्वैच्छिक सामाजिक न्याय को जागृत करने हेतु इस तरह के एकमात्र प्रयोग के कारण इसकी सराहना की गई।

भूदान आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी चर्चा का विषय बना रहा और हिंदी साहित्य का फलक भी इससे बच नहीं पाया। हिंदी साहित्य जगत के तमाम बड़े रचनाकारों ने भी इस विषय पर लेखन कार्य किया है। हिंदी साहित्य के गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में इस आंदोलन से संबंधित रचनायें मिलती हैं।

श्रीलाल शुक्ल कृत " विश्रामपुर का संत" भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक जीवन की यथार्थ झलक दिखाई देती है साथ ही ऐतिहासिक घटनायें के क्रम में निजी जीवन के उत्थान पतन को भी बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है ।इस उपन्यास में भूदान आंदोलन के ज़मींदारों की उदारता की खिल्ली उड़ाई है।अपने उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने आंदोलन की सफलता और असफलता पर गहराई से चिंतन किया है । साथ ही भूदान की आड़ में

ज़मींदारों ने अपना उल्लू सीधा कैसे किया, आश्रम व्यवस्था और सहकारी फार्मों को बढ़ावा कैसे दिया, इसे भी स्पष्ट किया है।

उदयराज सिंह कृत "भूदान सोनिया" उपन्यास भी भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसका नायक नवीन एक छात्र है जो प्रो. गोकुलदास की प्रेरणा से देश की आज़ादी की यज्ञ में कूद पड़ता है ।नवीन के देशभक्त बलिदानी व्यक्तित्व से नायिका सोनिया प्रभावित हो मन ही मन उसे अपना पति मन लेती है ।परंतु चुनाव जीतने पर नवीन की मनोवृत्ति में आए बदलाव को देखकर सोनिया विक्षुब्ध होकर चली जाती है ।वह भूदान यज्ञ में सहयोग देती है ।तथा दीन-दुखियों की सेवा करने लगती है ।इसी से भूदान सोनिया को विशेषण प्राप्त होता है। इस उपन्यास में राजनीतिक पृष्ठभूमि और स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम चरण के जन-जीवन की अत्यंत सूक्ष्म,यथार्थ,विशद और मार्मिक अभिव्यंजना हुई है।इसमें भूदान आंदोलन के महत्व को प्रतिपादित किया गया है।

मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भूमिभाग' सन 1953 में प्रकाशित भूदान सम्बंधित सामयिक गीतों का संग्रह है।इस गीतिकाव्य में 21 गीत हैं।कवि की मान्यता है कि विनोबा द्वारा अनुष्ठित भूदान यज्ञ ने अहिंसक क्रांति के ज़रिए सारे संसार का ध्यान अपनी ओर खींचा है।यह रचना विनोबा जी के पुण्य कार्य के लिए दी गयी कवि की विनम्र श्रद्धांजलि है ।

सेठ गोविंददास कृत नाटक भूदान यज्ञ में आंदोलन के प्रारंभ होने से लेकर सन 1960 ई. तक की स्थितियों को दर्शाया गया है ।तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव से भूदान आंदोलन की शुरुआत हुई । पहले तो लोगों को यक़ीन ही नहीं हुआ कि ज़मीन जैसी चीज़ भी कोई दान में दे सकता है । वह होता दिखा तो उन्होंने कहा कि तेलंगाना में वहाँ की विशिष्ट परिस्थिति के कारण हुआ होगा। अन्यत्र नहीं होगा लेकिन वहाँ भी होता दिखा ।

नाटक में एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जो अपना सर्वस्व दान दे रहे थे, चाहे वो ज़मींदार हो,छोटे किसान एवं मज़दूर हो। दूसरी तरफ़ ऐसे भी लोग थे जिन्हें लग रहा था कि यह आंदोलन उनसे सर्वस्व छीनकर उनको भिखमंगा बनाने देगा ।भूदान आंदोलन का लक्ष्य हृदय परिवर्तन था। नाटक के अंत में भी यही हुआ ।सभी साम्यवादियों का हृदय परिवर्तन हो गया, कुछ ने पश्चाताप के लिए आत्महत्या की,तो औरों ने अपना सर्वस्व दान कर भूदान के काम में लग गए।

भूदान आंदोलन में हिंदी के कई कवियों ने भी भाग लिया और कई कविताएँ भी लिखी,जिनमें नागार्जुन, महादेवी वर्मा,रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, मैथिलीशरण गुप्त आदि शामिल हैं।

नागार्जुन ने विनोबा जी की प्रशंसा में लिखा-

'सर्वोदय के संत तुम्हारे मीठे-मीठे बोल
सत्य अहिंसा ज़मींदार के दिल में देंगे घोल
भूमिदान लेने आए हैं बात कर रहे याद
कैसी तप साधना कैसी,कैसा वह भूदान।'

"विनोबा स्तवन" में बालकृष्ण शर्मा नवीन ने विनोबा के व्यक्तित्व की महिमा का वर्णन करते हुए उनके संदेशों का प्रतिपादन किया है। भूमिदान यज्ञ का सार निम्नलिखित पंक्तियों में उपलब्ध है-

'नित्य, सनातन, नित्य, पुरातन
अति करुणायन, नित्य नवीन
"दान समविभाजन" उसका यह
अद्भुत संदेश अदीन।'

राष्ट्रकवि "रामधारी सिंह दिनकर" ने भी भूदान के समर्थन में कविताएं लिखी-

सुरम्य शांति के लिए जमीन दो जमीन दो
महान क्रांति के लिए जमीन दो जमीन दो।'

मैथिलीशरण गुप्त,सियारामशरण गुप्त,महादेवी वर्मा, अरविंद ने भी भूदान से संबंधित रचनाएं लिखी । मार्कंडेय कृत उपन्यास "अग्निबीज" आजादी के बाद सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि के व्यापक फलक पर लिखा गया एक सफल राजनीतिक उपन्यास है।उपन्यास की कथा में चित्रित काल कांग्रेसी शासन के दृढीकरण के साथ ही गहरे मोहभंग का भी काल है। उपन्यास में गांधीवादी भागो बहन भूदान आंदोलन के नेता विनोबा भावे को निसंकोच सरकारी संत कहती है ।विनोबा और कांग्रेस पर व्यंग करते हुए आगे वह कहती है ।"लगता है विनोबाजी को सार्वजनिक क्षेत्र में लेकर जवाहरलाल ने ऊपर ही ऊपर उनका सरकारी करण किया है ।"उपन्यास की कथा के केंद्र में बजमा नदी के तटवर्ती रामपुर और सेतपुर गांव और वहां की सामाजिक राजनीतिक गतिविधियां चित्रित हुई हैं। जिसमें परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियां जमींदारी उन्मूलन के रूप में टूटती सामंती व्यवस्था शोषण के नए तरीके राजनीतिक हास, चुनावी आतंक,जातिगत भेदभाव,मोहभंग,नई चेतना,गरीबी, अभाव आदि का विस्तार से अंकन हुआ है।

विनोबा भावे के भूदान आंदोलन को अपनी कथा का आधार बनाकर मार्कण्डेय ने भूदान शीर्षक से कहानी लिखी। यह उनके कहानी संग्रह का भी नाम है।यह उनके कहानी संग्रह का भी नाम है।इसमें जमीन को लेकर दो कथाएं एक साथ चलती हैं। कथा में चेलिक पहलवान नील की खेती के लिए अपनी जमीन देने से मना कर देता है- 'धरती और मेहरारू कोई किसी को देता है।बांस की खपच्चिओं, पीठ पर हंटर, कमर पर लकड़ी के कुंदे जैसी यातना से गुजरने के बाद भी उसकी 'ना' ही रहती है। अंततः अपनी बूढी माँ की कीमत पर वह उस निलहे से मुक्त हो पाता है।गांव के लोग उसकी माँ की याद में 'बनसत्ती माई' का चौरा बना देते हैं। चमरौटी में रहने वाला ठाकुर का बेभूँय (भूमिहीन) हरवाहा रामजतन इस उम्मीद में है कि ठाकुर साहब भूदान आंदोलन में अपने खेत से उसे कुछ देंगे। निलहे फिरंगी से जूझते हुए चेलिक पहलवान जीत जाता है पर ठाकुर से जमीन पाने की महीन राजनीति में चमरौटी का बेभूँय हरवाहा रामजतन पराजित हो जाता है। उसकी हलवाही भी छुड़ा दी जाती है।

डॉ. मधुकर गंगाधर कृत उपन्यास 'उतरकथा' के नायक गोपीमामा, जो गांधीजी के परम भक्त एवं प्रेमी हैं। आगे विनोबा भावे जी के आह्वान पर गोपीमामा भूदान आंदोलन में स्वयं को समर्पित करते हैं। अंत तक वे आशावादी रहते हैं।यह उपन्यास देश की सेवा के लिए त्याग करने वाले नायक की संघर्षमय जीवन की करुण गाथा प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है।

"भूदान" उपन्यास भगवती प्रसाद बाजपेयी का एक सामाजिक उपन्यास है। यह राष्ट्र के नवनिर्माता विनोबा भावे की भावना से ओतप्रोत है। केदार बाबू, शंकर, वकील साहब तीनों पात्रों को आधार केंद्र में रखकर आधुनिक समाज की अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार किया गया है। विधवा जीवन की समस्या, एक गरीब परिवार की आर्थिक समस्या, विवाहिता होने पर भी पराए व्यक्ति से मुक प्रेम और उसकी परिणति, भूमि विवाद का समाधान आदि विषयों का चित्रण है। इसमें शंकर एक सशक्त चरित्र के रूप में उभरा है। उसके चरित्र में मुकाबला शक्ति है विनोबा मिशन से प्रभावित होकर बाजपेयी जी ने भूदान उपन्यास की रचना की है।जिस प्रकार गांधी के आदर्शों,उनके कार्यों, को रचनात्मक रूप में विनोबा भावे आगे बढ़ाते हैं। उसी प्रकार लेखक ने केदार बाबू को विनोबाजी से प्रभावित उनके मार्गों का अनुकरण करते हुए दर्शाया है। साथ ही आने वाली अगली

पीढ़ी को शंकर के माध्यम से समाज में आदर्श, नैतिकता, धर्म, समानता, एकता, स्वतंत्रता को समाज में स्थापित करना लक्ष्य है। इस उपन्यास में आदर्शवादी स्वर मिलता है।

निष्कर्ष

साहित्य का हमेशा से अपने युगीन परिस्थितियों से संबंध रहा है। इसलिए हिंदी साहित्य में भूदान आंदोलन की सफलताओं, असफलताओं उसकी सीमाओं और उपलब्धियों का विवेचन साहित्य की तमाम विधाओं के माध्यम से किया गया है। इस आंदोलन से नैतिक दबाव जमींदारों पर पड़ा कुछ जमींदारों ने सीमांकन से बचने के लिए इसका सहारा लिया। उन सभी पहलुओं की उपस्थिति हिंदी साहित्य में हिंदी साहित्यकारों ने दर्ज की। इस आन्दोलन में कष्ट ही थे, न सता का आश्वासन था, न पैसे का, न प्रतिष्ठा का, फिर भी वे सालों तक उपेक्षा, उपहास, निंदा, विरोध, और अभावों का सामना करते रहे। आन्दोलन की निश्चय ही यह महत्वपुर्ण उपलब्धि थी। आन्दोलन अपने घोषित उद्देश्य पूरे करने में असफल रहा लेकिन इस आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है, विकल्प की प्रस्तुति।

संदर्भ

1. शिवकुमार मिश्र, पदयात्री संत और भूदान यज्ञ, अनासक्ति दर्शन, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति 2011।
2. सेठ गोविंद दास, भूदान यज्ञ, मध्यप्रदेशीय भूदान यज्ञ समिति, नागपुर, 1957।
3. रामधारी सिंह दिनकर, मृति तिलक, लोकभारती पेपरबैक, इलाहाबाद, 2019।
4. रामवृक्ष बेनीपुरी, विनोबा के साथ दो दिन,सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी, 20164. भगवती प्रसाद बाजपेयी, भूदान, भारत भारती लिमिटेड, अंसारी रोड, दरियागंज 1955।
5. मार्कंडेय, मार्कंडेय की कहानियां, लोकभारती प्रकाशन।
6. मार्कंडेय, अग्निबीज, लोकभारती प्रकाशन,नई दिल्ली, 1981
7. उदय राज सिंह,भूदान सोनिया,अशोक प्रेस, पटना, 1957।
8. श्रीलाल शुक्ल,विश्रामपुर का संत,राजकमल प्रकाशन, 1998
9. डॉ. पराग चोलकर, भूदान-ग्रामदान आन्दोलन, गांधी स्मृति और दर्शन समिति, 2011।
10. काका कालेलकर, विनोबा और सर्वोदय क्रांति, सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 1970।
11. मधुकर गंगाधर, उत्तरकथा, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2015